JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वाल्मीकि रामायण में नारी विषयक अवधारणा एक विमर्श

डॉ॰ सिमरन शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
एस० बी० कॉलेज, आरा,
वीर कुंवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

सारांश

रामायण भारतीय संस्कृति की अनुपग चरोहर है। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज जब–जब अंधेरों में भटका, वह रामायण रूपी सागर से प्रकाश की मोती चुनता रहा और अपनी जीवनधारा को उससे आलोकित कर तमाम चुनौतियों का सामना करता रहा। प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक प्रायः सभी लेखकों ने रामायण में स्त्री पात्रों का चित्रण प्रायः अपने–अपने तरीके से किया है और सभी ने उसके उदात्त, आदर्श, उच्च व कर्मठ तथा साहसी रूपों की ही चर्चा की है। लेकिन आधुनिक काल तक आते–आते सामाजिक परिस्थितियों में परिवर्तन के साथ–साथ साहित्यकारों के विचारों में परिवर्तन आया, और परिवर्तन आया रामायण के नारी पात्रों की संरचना एवं अस्तित्व में। परिणामस्वरूप आदर्श एवं उदात्त नारी के स्थान पर कर्मठ एवं पुरुष मुक्त स्वतन्त्र नारी ने स्थान ले लिया। साहित्य के इस बदलाव ने अपने सभी पात्रों के माध्यम से आधुनिक जगत के नारी विमर्श को एक नई दिशा प्राप्त करने के लिए विवश कर दिया।

मुख्य शब्द – रत्री विमर्श, मातृभक्ति, आदर्श पवित्रता, ब्रह्मचारिणी समर्पणशीलता, युग धर्म की रक्षिका ।

प्रस्तावना –

वाल्मीकि रामायण भारतीय धर्म की आधारशीला कहा जाता है। यदि रामायण को भारतीय संस्कृति का रूपक कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। रामायण भारतीय समाज की ऐसी संस्कृति धरोहर है जिसमें सामाजिक एवं पारिवारिक आदर्शों की विशद् विवेचना की गयी है। यह ग्रंथ विविध– शिक्षाओं का भंडार है– पिता–पुत्र के बीच क्या कर्तव्य हो, भाईयों के बीच निःस्वार्थ प्रेम, पति–पत्नी के सम्बन्धों की संवेदनशीलता, नारी जाति का सम्मान, इत्यादि के राम्बन्ध में रामायण हर एक कसौटी पर शुद्धता के लिए प्रतीक है। रामायण में सारी नारी पात्र अपनी–अपनी विशिष्टता लिए हुए है, क्योंकि उनमें भारतीय मूल्यों के लिए असीम आस्था है। सभी साहित्कारी ने इन्हे साहित्योचित समायोचित एवं पात्रोचित महिमा प्रदान की है। लेकिन जहाँ पे सभी पात्र तत्कालीन समाज के परिस्थितियों, समस्याओं एवं मूल्यों को उद्घाटित करते हैं वहीं दूसरी ओर स्त्री सम्बन्धी दृ ष्टिकोणों को प्रतिपादित करते हुए बहुत सारे नारी विषयक प्रश्न चिन्ह भी प्रस्तुत करते है। जो कि स्त्री विमर्श

को सीधे–सीधे चुनौती देता है। प्रस्तुत शोध में ऐसे ही ज्वलंत प्रश्नों को विमर्श के माध्यम से प्रस्तुत करता है।

अध्ययन का उद्देश्य –

1. सदियों से चली आ रही नारी की सामाजिक स्थिति में आए परिवर्तनों का उद्‌घाटन ।
2. प्राचीन काल से नारी के उदात्त, आदर्श, त्याग एवं बलिदानमयी पात्रता का आधुनिक परिस्थिति जन्य परिवेश में उसकी श्रेष्ठता के साथ पुनः प्रतिपादन।
3. अलग–अलग नारी पात्रों के माध्यम से नारी के जीवन के विभिन्न पक्षों को उद्‌घाटित करना ।
4. साहित्य के बदलते स्वरूप एवं पात्रों के अस्तित्व की महिमा पर आधुनिकता का प्रभाव।

रामायण के सभी पात्र भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को महिमा प्रदान करते दिखाई देते हैं। विशेष रूप से नारी पात्र अपनी विशिष्टता लिए हुए हैं। उनमें भारतीय मूल्यों की लिए असीम आस्था है, त्याग है, आदर्श पतिव्रता है, विवेकवान, समर्पणशील की प्रतिमूर्तियाँ है, कर्तव्यपरायण व युग धर्म की रक्षिका भी है। समय आने पर अपनी श्रेष्ठता भी सिद्ध करती है। सम्पूर्ण कथानक को आदर्श मंडित करने में नारी पात्रों की विशेष भूमिका रही है। रामायण में वर्णित पात्र–सीता, कौशल्या, कैकेयी, उर्मिला, मंदोदरी, माण्डवी, श्रुतिकीर्ति, सुमित्रा, मंथरा, शुर्पणखा, शबरी आदि नारी पात्र इतने भव्य रूप से चित्रित हुए हैं कि पुरुष भी उन्हीं के पथ का अनुसरण करते हैं। सीता के आदर्श से प्रभावित लक्ष्मण कहते हैं–

"नारी के जिस भव्य भाव का, स्वाभिमान भाषी हूँ मैं!

उसे नरों में भी पाने का, उत्सुक अभिलाषी हूँ।"[1]

आधुनिक राम काव्यों के नारी चरित्रों में सीता का चरित्र सबसे अधिक संघर्षमय रहा है। सीता पतिव्रता, त्याग एवं शील की मूर्ति है। 'साकेत', 'उर्मिला', 'वैदेही', 'बनवास' आदि काव्यों की पालन करने वाली आदर्श भारतीय नारी. में चित्रित है। उनके चरित्र के मानव–मूल्यों के प्रति आस्था है। भरत जब चित्रकूट पहुंचता है, तो सीता माँ के समान आशीर्वाद देती हैं कि वे राम से अधिक यशस्वी बने !

"मैं अम्बा सम आशीष तुम्हे दूँ, आओ।

निज अग्रण से भी शुभ्र सुयश तुम पाओं।"[2]

स्त्री का स्वभाव विनयशील, लज्जाशील, संयमशील एवं सहिष्णु होता है। स्त्री दया, ममता, माया, प्रेम, श्रद्धा, करुणा, लज्जा आदि गुणों से युक्त होती है। भारतीय संस्कृति में स्त्री में इन्ही गुणों की प्रशंसा की गई है। रामायण में इसी परिप्रेक्ष में अनेक स्थानों पर ऐसे उदाहरण प्राप्त होते हैं जिनमें नारी–शक्ति पुरुषों से कही अधिक बुद्धिमती, विवेकी एवं सहिष्णुता के गुणों से परिपूर्ण प्रतीत होती है।

वाल्मीकि रामायण के अवलोकन से प्रतीत होता है कि नारी को शिक्षा से वंचित नहीं किया जाता था। विवाह पूर्व ही धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत उन्हें वैदिक मंत्रों के उच्चारण का ज्ञान कराया जाता था। राम के वन–गमन से राम की माता कौशल्या द्वारा स्वस्तिवाचन भी किया गया।[3] जो कि वैदिक मंत्रों की शिक्षा का अनुपम उदाहरण प्रतीत होता है।

इसी प्रकार राजा दशरथ पत्नी कैकयी नै सैनिक शिक्षा भी ग्रहण की की दूसरी थी। दैत्यों साथ रणभूमि में जब दशरथ घायल हो गए तो कैकयी ने ही उनकी रक्षा की थी ![4] सीता को प्रदान की गई धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत अशोक वाटिका में रहते हुए सांध्य कालीन उपासना करना भी नारी शिक्षा का सटीक उदाहरण है।[5] नैतिक शिक्षा के अतिरिक्त पति–सेवा एवं पति के प्रति कर्तव्यों की शिक्षा का भी प्रावधान था। रामायण के अनुसार पति की सेवा करने वाली स्त्रियाँ 'ब्रह्मचारिणी' कही जाती थी, अतः वनगमन हेतु सीता ने राम से नियमपूर्वक रहकर तथा सेवा में तत्पर होकर वन में विचरण करने के लिए कहा था।[6] पतिव्रता स्त्री को पति के अभाव में सौ पुत्र भी सुख प्रदान नहीं कर सकते।[7]

माता सीता के अलावे रामायण में शबरी जैसे तपस्विनी, स्त्री के विषय में भी वर्णन मिलता है जो सदा ही धार्मिक अनुष्ठान में व्यस्त रहती थी। वह सिद्ध तपस्विनी स्त्रियों से सम्मान प्राप्त थी।[8] वेदवती नामक तपस्विनी मृगचर्म धारण करके तपस्या में लीन रहती थी इसी तपस्या के बल पर ही वह रावण के गलत मनोभावों को जान गई थीं।[9] मेरुसावणि की पुत्री स्वयंप्रभा अपने पिता के सान्निध्य में रहते हुए ईश–विद्या की शिक्षा ग्रहण करती थी।

रामायण में मानव स्त्रियों के अतिरिक्त वानर स्त्रियों के बुद्धिमता की चर्चा की गई है। वानरपत्नी तारा ने बालि को समझाने का प्रयत्न किया था परन्तु अन्ततः मृत्यु, को प्राप्त हुआ। हनुमान जी द्वारा उसे 'विदुषी' की संज्ञा दी गई।[10] ज्ञान एवं चरित्र के क्षेत्र में राक्षस–पत्नियाँ भी कम नहीं थी। विभीषण पत्नी सरमा ने भी धार्मिक शिक्षा ग्रहण की हुई थी। राक्षसी स्त्रियाँ ललित कला संगीत, नृत्य एवं वाद्य में निपुण थी, क्योंकि लंका पहुंचकर हनुमान जी ने उन्हें विभिन्न वाद्यों सहित निद्रावस्था में देखा था।[11]

अनेक उदाहरणों द्वारा दृष्टिगत होता है कि रामायणकालीन स्त्रियों के साथ सम्मानजनक व्यवहार, किया जाता है। स्त्रियों के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए उनके चरणों में नतमस्तक हुआ जाता था। श्री राम द्वारा कैकयी के महल में पहुंचने पर सर्वप्रथम पिता दशरथ को प्रणाम करने के बाद माता कैकयी के चरणों को मस्तक से छुआ गया था।[12] वनवास की जानकारी माता कौशल्या को देकर सीता के महल की ओर प्रस्थान से पूर्व माता के चरणों को राम ने दोनों हाथ से स्पर्श प्रणाम किया।[13] सुशिक्षित उच्चवर्गीय राक्षसों द्वारा भी अभिवादन करते हुए स्त्रियों के प्रति सम्मान प्रकट किया जाता था। विभीषण द्वारा सीता को श्रीराम का समाचार देने के लिए अंजली बांधकर मस्तक से स्पर्श करने के उपरान्त अवगत कराया गया।

वाल्मीकि रामायण में स्त्री हिंसा को निकृष्ट बताया गया है। जब शत्रुध्न को मंथरा की गलत चाल का पता चला तो उन्होंने उसे प्रताड़ित किया तो भरत ने उन्हें रोकते हुए कहा कि स्त्रियाँ अवध्या होती है अतः इसे इसके अपराध के लिए क्षमा कर दें।[14] इसके अलावे यदि किसी परिस्थिति में स्त्री–वध आवश्यक हो जाए तो उसकी हत्या न करके उसे अंगविहीन कर दिया जाता था। शूर्पणखा द्वारा बाधित किए जाने पर राम द्वारा लक्ष्मण को उसे किसी अंग से विहीन करने का आदेश दिया गया।[15]

जब सीता की तलाश करते हुए राम एवं लक्ष्मण क्रौंच वन में पहुंचे तो अयोमुखी राक्षसी ने लक्ष्मण से

प्रणय निवेदन किया तो लक्ष्मण ने उसको भी अंगहीन कर दिया।[16]

लंका प्रवेश के समय हनुमान जी को रोकने के लिए राक्षसी लंकिनी ने थप्पड़ मार दिया परन्तु बदले में हनुमान जी ने उसे प्राणों से रहित न करते हुए केवल एक मुक्का मार दिया।[17] युद्ध में अपने प्रिय पुत्र की मृत्यु की खबर सुनकर रावण जब सीता को मारने के लिए उठा तो उसके मंत्री सुपार्श्व ने स्त्री–वध से उसे रोकते हुए उसके कृत्य का आभास कराया।[18] फलस्वरूप रावण ने सीता–क्ध का विचार त्याग दिया गया। रामायण काल में स्त्रियां पूजनीय होती थी लेकिन कभी–कभी परिस्थिति वश उनका क्ध भी कर दिया जाता था । युद्धभूमि में शत्रुपक्ष को दुःख पहुंचाने के लिए उनकी पत्नियों का वध कर दिया जाता था। श्रीराम ने ताड़का राक्षसी का वध कर दिया था क्योंकि विश्वामित्र द्वारा ब्राह्मणों एवं गायों की रक्षा करना राम का कर्तव्य बताया गया जिससे प्रेरित होकर राम ने राक्षसी का वध किया।[19] इस प्रेरणा के पीछे विश्वामित्र द्वारा इन्द्र एवं विष्णु भगवान की कथा का प्रसंग बताया गया था।[20] रामायण काल में स्त्री वध घृणा की दृष्टि रो देखा जाता था इसलिए बालि की पत्नी तारा ने राम से प्रार्थना की आप मेरा वध 'बालि की आत्मा' समझकर करे। इससे आपको स्त्री हत्या का पाप नहीं लगेगा।[24] स्त्री वध के दुष्परिणाम की चर्चा करते हुए हनुमान जी कहते हैं कि यह कुकृत्य करनेवाला अकाल मृत्यु को प्राप्त होकर नरकगामी होता है।[22]

'रामायण कालीन समाज महिलाओं को घूमने–फिरने की पूर्ण स्वतंत्रता थी। महिलाएं अपने पति के साथ स्वतंत्र होकर भ्रमण करती थी। वनवास का समाचार सुनकर सीता श्रृंगार करके प्रसन्तापूर्वक रथ पर आरूढ़ हो गई। सीता वनवास में भी राम के साथ वन–विहार हेतु जाया करती थी। सीता जब गर्भवती हुई तो उन्होंने भी ऋषियों के आश्रम देखने की इच्छा जताई थी। उस समय स्त्रियां अपने पति के साथ युद्धभूमि तक भी जाया करती थी। इसका कैकयी इसका जीता जागता उदाहरण है। रानियाँ अपने सास–ससुर से परदा नहीं करती थी। वन जाने से पूर्व विदा लेने के लिए सीता भी राम लक्षण के साथ राजा दशरथ एवं उनकी पत्नी से आज्ञा लेने गयी थी।[24]

वनवास के दौरान सीता ऋषि–मुनियों के आश्रम में ऋषियों एवं शिष्यो के सम्मुख स्वतंत्रापूर्वक उठती–बैठती थी। यद्यपि रामायण कालीन स्त्रियों को कही भी आने–जाने की स्वतंत्रता थी लेकिन उनको परदे का भी उपयोग करना पड़ता था। वन जाने से पहले राम एवं लक्ष्मण के साथ जब सीता जी दशरथ जी से आज्ञा लेने आई तो नगर के लोगों ने उनको देखा था इस पर खेद प्रकट करते हुए वाल्मीकि जी से कहा था कि सीता किसी आकाशमार्ग से जानेवाली प्राणियाँ द्वारा देखी नही जा सकती थी। उसी सीता को आज राजमार्ग से गमन करने वाले व्यक्ति देखते हैं।[25]

रामायणकालीन स्त्रियों को जहाँ एक ओर समाज को सम्मानीया एवं अवध्या, स्वतंत्र रूप में प्रस्तुत किया गया है, वहीं दूसरी और उसे निन्दा भी सहन करनी पड़ी है लेकिन स्त्री जाति को जो भी कटु क्चन कहे गए प्रतीत होते है वह सिर्फ कैकयी को ही लक्ष्य बनाकर कहे गए हैं। भरत ने अपनी माता को दहकते अंगारे की उपाधि दी।[26] माता सीता की तुलना विषधर सर्प से की गई है। विभीषण द्वारा रावण को भी परामर्श दिया गया कि सीता को श्री राम को साँप देना उचित होगा अन्यथा सर्प की भांति वह समस्त कुल का नाश कर देगी।

रामायण में स्त्रियों को हठीली भी कहा गया है क्योंकि कैकयी अपने दो वरदानों को प्राप्त करने की जिद पर अड़ी रही। स्वर्णमृग देखकर उसे प्राप्त करने की जिद पर सीता भी अड़ी रही।[28] रामायण में स्त्री को चंचलता की प्रतिमूर्ति भी कहा गया है।[29]

उपयुक्त स्त्री–विमर्श को दृष्टिगत करते हुए कहा जा सकता है कि एक ओर जहाँ स्त्री सौम्यता की प्रतिमूर्ति हैं तो दूसरी और किसी–न–किसी अवगुण के कारण भी स्त्री जाति सम्मान से वंचित भी रह जाती है।

निष्कर्ष–

उपयुक्त नारी–विमर्श को दृष्टिगत करते हुए कहा जा सकता है कि एक ओर जहाँ नारी सौम्यता की प्रतिमूर्ति है तो दूसरी ओर किसी–न–किसी कमी के कारण वह सम्मान से वंचित रह जाती है। मगर हमें यह याद रखना चाहिए कि आज स्त्रियां अपनी शारीरिक और बौद्विक शक्ति को प्रभावित कर चुकी है। अगर समाज को आदर्श समाज बनाना है तो नारी की स्थिति में सुधार लाना आवश्यक है। इतिहास गवाह है कि स्त्री हर एक क्षेत्र में प्रत्येक स्तर पर पुरुष के समक्ष खड़ी होकर सफल एवं सक्रिय रही है। जिसके उदाहरण रामायण के उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट हो जाता है सामान्यतः पुरुष भावुकता के आवेश में आकर अपनी मानसिक संतुलन खो देता है लेकिन इस संतुलन को जो बनाए रखता है सच्चे अर्थ में वही महापुरुष है। इस कसौटी पर यदि कोई खरा उतरता है तो नारी ही है। अतः स्त्री के आन्तरिक क्षमताओं का आकलन ना करके उसे विवेकशून्य अल्पबुद्धि और भावुक समझना हमारी बड़ी भूल है। रामायण में ज्ञान एवं विवेक के समान भक्ति एवं तप के सम्बन्ध में भी स्त्री के अलग ही कीर्तिमान स्थापित हुए हैं।

संदर्भ–सूची

1. मैथिली शरण गुप्त : साकेत : पृ० 94.
2. मैथिली शरण गुप्त : साकेत : द्वितीय सर्ग : पृ०–57
3. अयोध्या काण्ड : 25.46.1
4. उपरिवत् : 9.16
5. सुन्दरकाण्ड : 15.49 6. अयोध्याकाण्ड : 27.13
7. उपरिवत् : 39.29
8. अरण्यकाण्ड : 74.10
9. उत्तरकाण्ड : 17.
10. किष्किन्धाकाण्ड : 21.5
11. सुन्दरकाण्ड : 10.49
12. अयोध्याकाण्ड : 18.2
13. उपरिवत् : 25.47
14. अयोध्याकाण्ड : 78.21
15. अरण्यकाण्ड : 18.21
16. अरण्यकाण्ड : 67.17
17. सुन्दरकाण्ड : 3.40.
18. युद्धकाण्ड : 92.64

19. बालकाण्ड : 26.25
20. उपरिवत् : 25.21
21. किष्किन्धाकाण्ड : 24.37
22. युद्धकाण्ड : 81.82
23. उत्तरकाण्ड : 42.33
24. अयोध्याकाण्ड : 33.1
25. उपरिवत् : 33.8
26. अयोध्याकाण्ड : 73.41
27. युद्धकाण्ड : 14.2
28. अरण्यकाण्ड : 43.10
29. अयोध्याकाण्ड : 72.46